



Hemat raw

22 Nov 1978

09:05 AM

Robertsganj

Model: Web-MyKundli

Order No: 121958901

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 22/11/1978
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 09:05:00 घंटे
इष्ट _____: 06:55:57 घटी
स्थान _____: Robertsganj
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 24:42:00 उत्तर
रेखांश _____: 83:04:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:02:16 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 09:07:16 घंटे
वेलान्तर _____: 00:13:59 घंटे
साम्पातिक काल _____: 13:10:22 घंटे
सूर्योदय _____: 06:18:37 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:08:53 घंटे
दिनमान _____: 10:50:17 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: हेमन्त
सूर्य के अंश _____: 05:54:46 वृश्चिक
लग्न के अंश _____: 12:05:19 धनु

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: धनु - गुरु
राशि-स्वामी _____: कर्क - चन्द्र
नक्षत्र-चरण _____: आश्लेषा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: बुध
योग _____: ऐन्द्र
करण _____: बव
गण _____: राक्षस
योनि _____: मार्जार
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: जलचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: डो-डोभाल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: वृश्चिक

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1900	मार्गशीर्ष	1
पंजाबी	संवत : 2035	मार्गशीर्ष	7
बंगाली	सन् : 1385	मार्गशीर्ष	6
तमिल	संवत : 2035	कार्तिक	7
केरल	कोल्लम : 1154	वृश्चिक	7
नेपाली	संवत : 2035	मार्गशीर्ष	7
चैत्रादि	संवत : 2035	मार्गशीर्ष	कृष्ण 7
कार्तिकादि	संवत : 2035	कार्तिक	कृष्ण 7

पंचांग

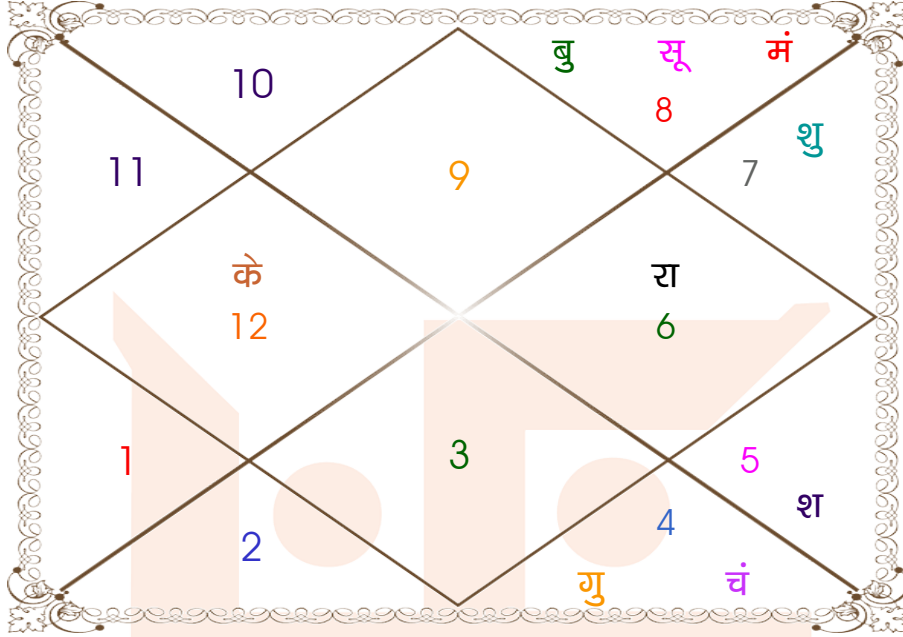
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 7
तिथि समाप्ति काल _____ : 13:39:35
जन्म तिथि _____ : 7
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 13:26:47 घंटे
जन्म योग _____ : आश्लेषा
सूर्योदय कालीन योग _____ : ब्रह्म
योग समाप्ति काल _____ : 08:17:19 घंटे
जन्म योग _____ : ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____ : बव
करण समाप्ति काल _____ : 13:39:35 घंटे
जन्म करण _____ : बव
भयात _____ : 56:44:02
भभोग _____ : 67:38:29
भोग्य दशा काल _____ : बुध 2 वर्ष 8 मा 29 दि

घात चक्र

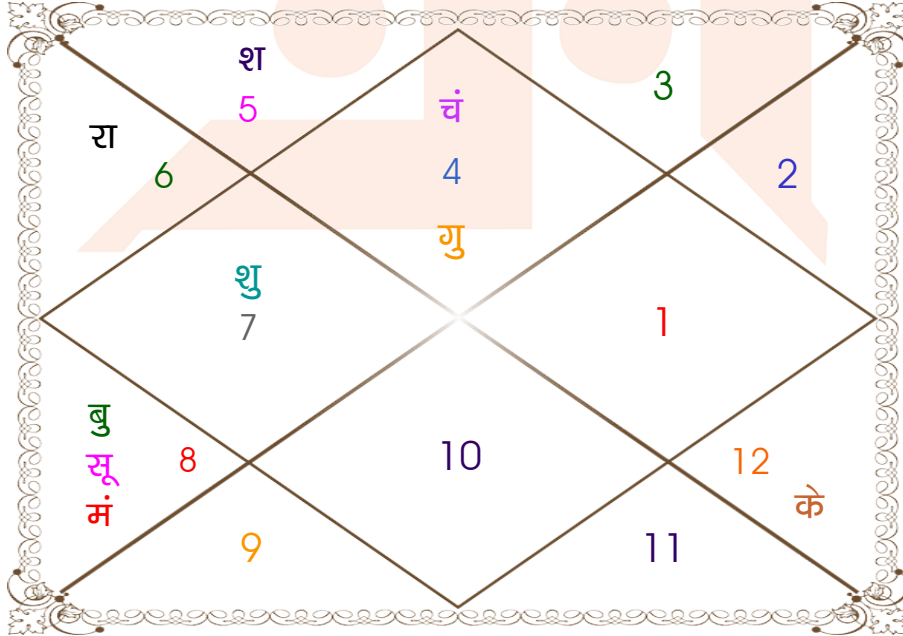
मास _____ : पौष
तिथि _____ : 2-7-12
दिन _____ : बुधवार
नक्षत्र _____ : अनुराधा
योग _____ : व्याघात
करण _____ : नाग
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : तुला
सूर्य _____ : सिंह
चन्द्र _____ : सिंह
मंगल _____ : कन्या
बुध _____ : मिथुन
गुरु _____ : तुला
शुक्र _____ : वृश्चिक
शनि _____ : कर्क
राहु _____ : धनु

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के			
			गु चं
			श
ल	बु सू मं	शु	रा

लग्न कुंडली

		के
गु चं		
श		ल
रा	शु	सू मं बु

विंशोत्तरी
बुध 2वर्ष 8मा 29दि
बुध

22/11/1978

21/08/2084

बुध	21/08/1981
केतु	21/08/1988
शुक्र	21/08/2008
सूर्य	21/08/2014
चन्द्र	21/08/2024
मंगल	21/08/2031
राहु	21/08/2049
गुरु	21/08/2065
शनि	21/08/2084

योगिनी

भामरी 0वर्ष 7मा 22दि
उल्का

15/07/2020

16/07/2026

उल्का	15/07/2021
सिद्धा	15/09/2022
संकटा	15/01/2024
मंगला	15/03/2024
पिंगला	15/07/2024
धान्या	14/01/2025
भामरी	14/09/2025
भद्रिका	16/07/2026

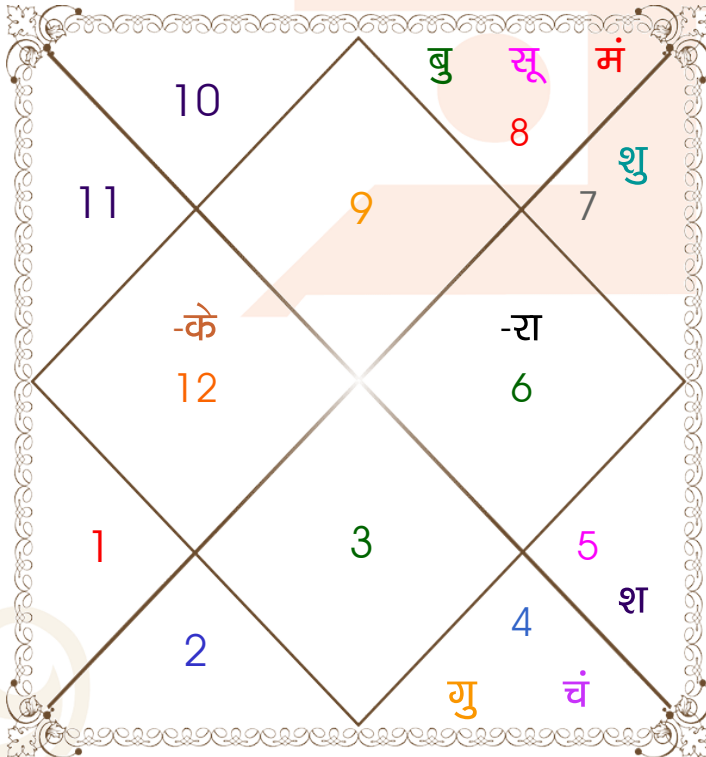
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			धनु	12:05:19	339:27:47	मूल	4	19	गुरु	केतु	बुध	---
सूर्य			वृश्चि	05:54:46	01:00:37	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	बुध	मित्र राशि
चंद्र			कर्क	27:50:46	11:50:30	आश्लेषा	4	9	चंद्र	बुध	गुरु	स्वराशि
मंगल	अ		वृश्चि	21:03:40	00:44:15	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	स्वराशि
बुध			वृश्चि	27:02:25	00:31:03	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	सम राशि
गुरु			कर्क	15:28:32	00:00:44	पुष्य	4	8	चंद्र	शनि	गुरु	उच्च राशि
शुक्र	व		तुला	14:37:11	00:15:51	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	केतु	मूलत्रिकोण
शनि			सिंह	19:24:28	00:03:28	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	राहु	शत्रु राशि
राहु	व		कन्या	00:44:37	00:01:05	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	00:44:37	00:01:05	पू०भाद्रपद	4	25	गुरु	गुरु	मंगल	मूलत्रिकोण
हर्ष			तुला	23:56:45	00:03:41	विशाखा	2	16	शुक्र	गुरु	बुध	---
नेप			वृश्चि	23:47:22	00:02:10	ज्येष्ठा	3	18	मंगल	बुध	मंगल	---
प्लूटो			कन्या	24:37:23	00:01:54	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	राहु	---
दशम भाव			कन्या	25:30:16	--	चित्रा	--	14	बुध	मंगल	राहु	--

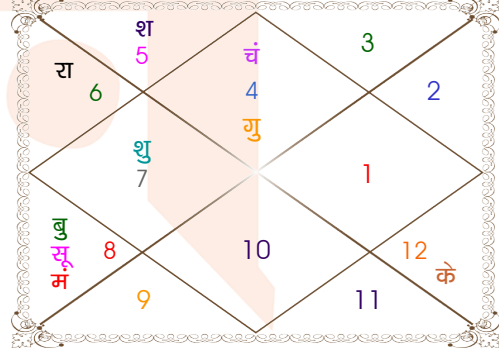
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:33:41

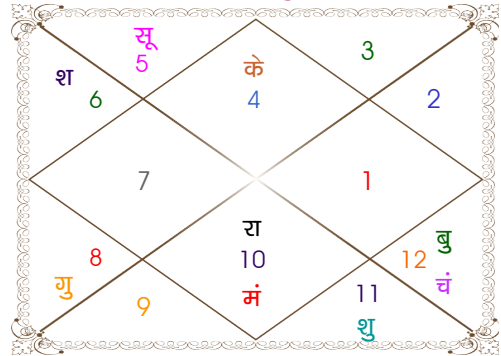
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	वृश्चिक 29:19:28	धनु 12:05:19
2	धनु 29:19:28	मकर 16:33:38
3	कुम्भ 03:47:47	कुम्भ 21:01:57
4	मीन 08:16:07	मीन 25:30:16
5	मेष 08:16:07	मेष 21:01:57
6	वृष 03:47:47	वृष 16:33:38
7	वृष 29:19:28	मिथुन 12:05:19
8	मिथुन 29:19:28	कर्क 16:33:38
9	सिंह 03:47:47	सिंह 21:01:57
10	कन्या 08:16:07	कन्या 25:30:16
11	तुला 08:16:07	तुला 21:01:57
12	वृश्चिक 03:47:47	वृश्चिक 16:33:38

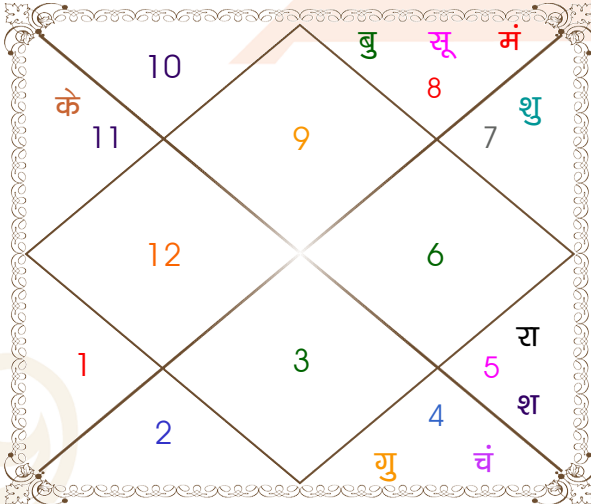
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	धनु	12:05:19
2	मकर	15:54:00
3	कुम्भ	22:00:29
4	मीन	25:30:16
5	मेष	23:47:58
6	वृष	18:19:21
7	मिथुन	12:05:19
8	कर्क	15:54:00
9	सिंह	22:00:29
10	कन्या	25:30:16
11	तुला	23:47:58
12	वृश्चिक	18:19:21

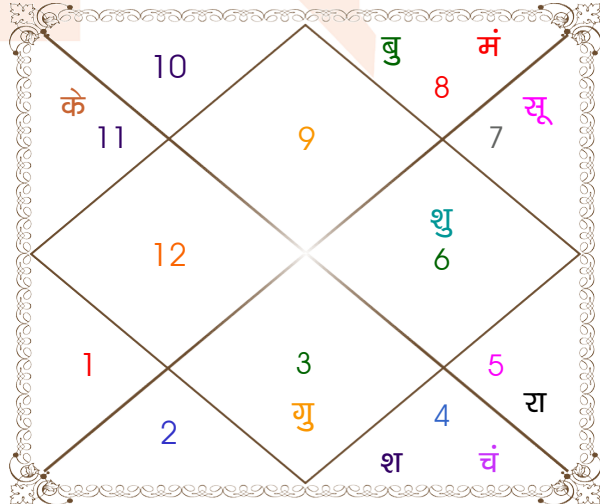
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा
ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद
रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : बुध 2 वर्ष 8 मास 29 दिन

बुध 17 वर्ष 22/11/1978 21/08/1981	केतु 7 वर्ष 21/08/1981 21/08/1988	शुक्र 20 वर्ष 21/08/1988 21/08/2008	सूर्य 6 वर्ष 21/08/2008 21/08/2014	चंद्र 10 वर्ष 21/08/2014 21/08/2024
00/00/0000	केतु 17/01/1982	शुक्र 21/12/1991	सूर्य 08/12/2008	चंद्र 22/06/2015
00/00/0000	शुक्र 19/03/1983	सूर्य 20/12/1992	चंद्र 09/06/2009	मंगल 21/01/2016
00/00/0000	सूर्य 25/07/1983	चंद्र 21/08/1994	मंगल 15/10/2009	राहु 22/07/2017
00/00/0000	चंद्र 23/02/1984	मंगल 21/10/1995	राहु 08/09/2010	गुरु 21/11/2018
00/00/0000	मंगल 21/07/1984	राहु 21/10/1998	गुरु 28/06/2011	शनि 21/06/2020
00/00/0000	राहु 09/08/1985	गुरु 21/06/2001	शनि 09/06/2012	बुध 20/11/2021
22/11/1978	गुरु 16/07/1986	शनि 21/08/2004	बुध 15/04/2013	केतु 21/06/2022
गुरु 12/12/1978	शनि 24/08/1987	बुध 22/06/2007	केतु 21/08/2013	शुक्र 20/02/2024
शनि 21/08/1981	बुध 21/08/1988	केतु 21/08/2008	शुक्र 21/08/2014	सूर्य 21/08/2024

मंगल 7 वर्ष 21/08/2024 21/08/2031	राहु 18 वर्ष 21/08/2031 21/08/2049	गुरु 16 वर्ष 21/08/2049 21/08/2065	शनि 19 वर्ष 21/08/2065 21/08/2084	बुध 17 वर्ष 21/08/2084 00/00/0000
मंगल 17/01/2025	राहु 04/05/2034	गुरु 09/10/2051	शनि 24/08/2068	बुध 17/01/2087
राहु 04/02/2026	गुरु 26/09/2036	शनि 21/04/2054	बुध 04/05/2071	केतु 15/01/2088
गुरु 11/01/2027	शनि 03/08/2039	बुध 27/07/2056	केतु 12/06/2072	शुक्र 14/11/2090
शनि 20/02/2028	बुध 20/02/2042	केतु 03/07/2057	शुक्र 12/08/2075	सूर्य 21/09/2091
बुध 16/02/2029	केतु 10/03/2043	शुक्र 03/03/2060	सूर्य 24/07/2076	चंद्र 19/02/2093
केतु 15/07/2029	शुक्र 10/03/2046	सूर्य 20/12/2060	चंद्र 23/02/2078	मंगल 17/02/2094
शुक्र 15/09/2030	सूर्य 02/02/2047	चंद्र 21/04/2062	मंगल 03/04/2079	राहु 05/09/2096
सूर्य 20/01/2031	चंद्र 02/08/2048	मंगल 28/03/2063	राहु 07/02/2082	गुरु 22/11/2098
चंद्र 21/08/2031	मंगल 21/08/2049	राहु 21/08/2065	गुरु 21/08/2084	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल बुध 2 वर्ष 8 मा 27 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - गुरु 04/02/2026 11/01/2027	मंगल - शनि 11/01/2027 20/02/2028	मंगल - बुध 20/02/2028 16/02/2029	मंगल - केतु 16/02/2029 15/07/2029	मंगल - शुक्र 15/07/2029 15/09/2030
गुरु 22/03/2026 शनि 15/05/2026 बुध 02/07/2026 केतु 22/07/2026 शुक्र 17/09/2026 सूर्य 04/10/2026 चंद्र 01/11/2026 मंगल 21/11/2026 राहु 11/01/2027	शनि 16/03/2027 बुध 13/05/2027 केतु 05/06/2027 शुक्र 12/08/2027 सूर्य 01/09/2027 चंद्र 05/10/2027 मंगल 28/10/2027 राहु 28/12/2027 गुरु 20/02/2028	बुध 11/04/2028 केतु 03/05/2028 शुक्र 02/07/2028 सूर्य 20/07/2028 चंद्र 19/08/2028 मंगल 09/09/2028 राहु 03/11/2028 गुरु 21/12/2028 शनि 16/02/2029	केतु 25/02/2029 शुक्र 22/03/2029 सूर्य 29/03/2029 चंद्र 11/04/2029 मंगल 19/04/2029 राहु 12/05/2029 गुरु 01/06/2029 शनि 24/06/2029 बुध 15/07/2029	शुक्र 24/09/2029 सूर्य 16/10/2029 चंद्र 20/11/2029 मंगल 15/12/2029 राहु 17/02/2030 गुरु 15/04/2030 शनि 21/06/2030 बुध 21/08/2030 केतु 15/09/2030
मंगल - सूर्य 15/09/2030 20/01/2031	मंगल - चंद्र 20/01/2031 21/08/2031	राहु - राहु 21/08/2031 04/05/2034	राहु - गुरु 04/05/2034 26/09/2036	राहु - शनि 26/09/2036 03/08/2039
सूर्य 21/09/2030 चंद्र 02/10/2030 मंगल 09/10/2030 राहु 28/10/2030 गुरु 14/11/2030 शनि 05/12/2030 बुध 23/12/2030 केतु 30/12/2030 शुक्र 20/01/2031	चंद्र 07/02/2031 मंगल 20/02/2031 राहु 24/03/2031 गुरु 21/04/2031 शनि 25/05/2031 बुध 24/06/2031 केतु 06/07/2031 शुक्र 11/08/2031 सूर्य 21/08/2031	राहु 16/01/2032 गुरु 27/05/2032 शनि 30/10/2032 बुध 19/03/2033 केतु 15/05/2033 शुक्र 27/10/2033 सूर्य 15/12/2033 चंद्र 07/03/2034 मंगल 04/05/2034	गुरु 29/08/2034 शनि 14/01/2035 बुध 18/05/2035 केतु 09/07/2035 शुक्र 02/12/2035 सूर्य 15/01/2036 चंद्र 28/03/2036 मंगल 18/05/2036 राहु 26/09/2036	शनि 10/03/2037 बुध 05/08/2037 केतु 04/10/2037 शुक्र 27/03/2038 सूर्य 18/05/2038 चंद्र 13/08/2038 मंगल 12/10/2038 राहु 17/03/2039 गुरु 03/08/2039
राहु - बुध 03/08/2039 20/02/2042	राहु - केतु 20/02/2042 10/03/2043	राहु - शुक्र 10/03/2043 10/03/2046	राहु - सूर्य 10/03/2046 02/02/2047	राहु - चंद्र 02/02/2047 02/08/2048
बुध 13/12/2039 केतु 05/02/2040 शुक्र 10/07/2040 सूर्य 25/08/2040 चंद्र 11/11/2040 मंगल 04/01/2041 राहु 24/05/2041 गुरु 25/09/2041 शनि 20/02/2042	केतु 14/03/2042 शुक्र 17/05/2042 सूर्य 05/06/2042 चंद्र 07/07/2042 मंगल 29/07/2042 राहु 25/09/2042 गुरु 15/11/2042 शनि 15/01/2043 बुध 10/03/2043	शुक्र 09/09/2043 सूर्य 03/11/2043 चंद्र 02/02/2044 मंगल 06/04/2044 राहु 17/09/2044 गुरु 10/02/2045 शनि 03/08/2045 बुध 05/01/2046 केतु 10/03/2046	सूर्य 26/03/2046 चंद्र 23/04/2046 मंगल 12/05/2046 राहु 30/06/2046 गुरु 13/08/2046 शनि 04/10/2046 बुध 20/11/2046 केतु 09/12/2046 शुक्र 02/02/2047	चंद्र 19/03/2047 मंगल 20/04/2047 राहु 11/07/2047 गुरु 22/09/2047 शनि 18/12/2047 बुध 05/03/2048 केतु 06/04/2048 शुक्र 06/07/2048 सूर्य 02/08/2048

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

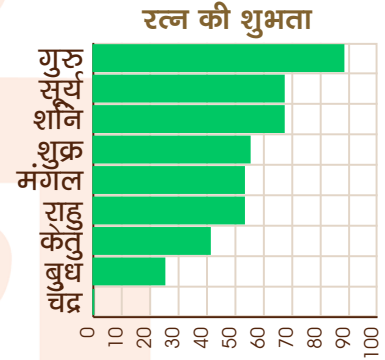
मूलांक	4
भाग्यांक	4
मित्र अंक	1, 4, 6
शत्रु अंक	3, 7, 8
शुभ वर्ष	22,31,40,49,58
शुभ दिन	रवि, गुरु, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, गुरु, मंगल
मित्र राशि	मीन, मेष
मित्र लग्न	मीन, सिंह, तुला
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	माणिक्य
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	88%	दुर्घटना से बचाव, स्वास्थ्य, सुख
माणिक्य	सूर्य	67%	कम खर्च, भाग्योदय
नीलम	शनि	67%	भाग्योदय, धन, पराक्रम
हीरा	शुक्र	55%	धनार्जन, शत्रु व रोग मुक्ति
मूंगा	मंगल	53%	कम खर्च, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	53%	व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	41%	ग्रह कलेश, दुर्घटना
पन्ना	बुध	25%	व्यय, दाम्पत्य कष्ट, व्यावसायिक हानि
मोती	चंद्र	0%	दुर्घटना



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
बुध	21/08/1981	73%	0%	53%	50%	88%	61%	67%	53%	41%
केतु	21/08/1988	55%	0%	59%	25%	88%	61%	55%	32%	58%
शुक्र	21/08/2008	55%	0%	53%	38%	88%	67%	73%	60%	52%
सूर्य	21/08/2014	80%	0%	59%	25%	94%	35%	55%	32%	16%
चंद्र	21/08/2024	73%	0%	53%	38%	88%	55%	67%	32%	16%
मंगल	21/08/2031	73%	0%	65%	0%	94%	55%	67%	32%	52%
राहु	21/08/2049	55%	0%	31%	25%	88%	61%	73%	66%	16%
गुरु	21/08/2065	73%	0%	59%	0%	100%	35%	67%	53%	41%
शनि	21/08/2084	55%	0%	31%	38%	88%	61%	80%	60%	16%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/11/1978-04/11/1979 15/03/1980-27/07/1980	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/10/1982-21/12/1984 01/06/1985-17/09/1985	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	06/09/2004-13/01/2005 26/05/2005-01/11/2006 10/01/2007-16/07/2007	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007 16/07/2007-10/09/2009	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती तृतीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038 05/04/2039-13/07/2039	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	24/08/2063-06/02/2064 09/05/2064-13/10/2065 03/02/2066-03/07/2066	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	बदनामी
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	धनार्जन
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	पराक्रम
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	शुभ	दम्पति
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	दुर्घटना

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

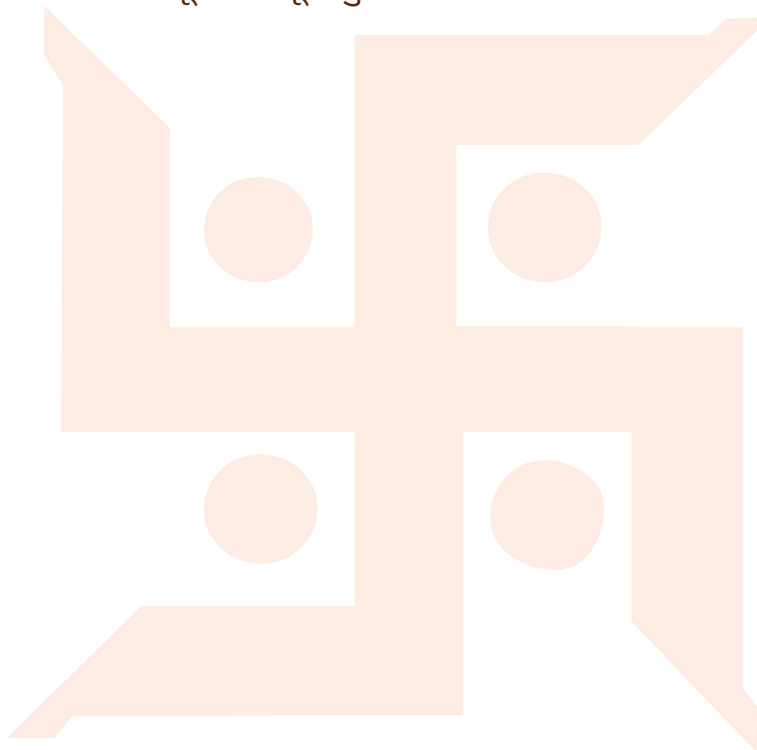
आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति लग्न से द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है। क्योंकि आपकी कुंडली में यह दोष किसी भी प्रकार से भंग नहीं हो रहा है। अतः इसके प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी तथा शुभाशुभ कार्यों पर आपका व्यय होता रहेगा जिससे यदा कदा अल्प मात्रा में आर्थिक परेशानी हो सकती है लेकिन यह स्थिति अल्पकालिक रहेगी। सामान्यतया आप आर्थिक रूप से सम्पन्न ही रहेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य आपका अच्छा रहेगा। यदा कदा मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान भी आएंगे परन्तु आप उनका सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा स्वभाव में उग्रता भी रहेगी जिससे परस्पर संबंधों में मतभेद हो सकते हैं लेकिन इसका कोई विशेष दुष्प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त सांसारिक सुखों का उपभोग करने में भी आपको किंचित व्यवधानों के साथ न्यूनाधिक सफलता प्राप्त होती रहेगी।

मंगल के इस प्रभाव से आपके विवाह में भी किंचित विलम्ब हो सकता है लेकिन इस कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। साथ ही विवाह पूर्व की किसी वार्ता में गतिरोध भी हो सकता है लेकिन विवाह के बाद आपके परस्पर संबंध समान रूप से अनुकूल रहेंगे तथा दाम्पत्य जीवन का उपभोग करने में आप समर्थ होंगे।

जन्म कुंडली में मंगल की द्वादश स्थिति के प्रभाव से आपकी प्रवृत्ति व्ययशील रहेगी परन्तु धनार्जन भी आवश्यक मात्रा में होता रहेगा जिससे इसका दुष्प्रभाव नहीं होगा साथ ही सांसारिक कार्यों में उत्पन्न व्यवधानों का सामना तथा समाधान करने में भी आप समर्थ रहेंगे। तृतीय भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से भाई बहनों का सुख एवं सहयोग मध्यम रहेगा परन्तु पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आत्मबल से आप युक्त रहेंगे जिससे कार्य क्षेत्र में आप

उन्नतिशील रहेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शत्रु पक्ष को पराजित करने में आप समर्थ रहेंगे। यदा कदा पित या गर्मी से आपको शारीरिक परेशानी की अल्प मात्रा में अनुभूति हो सकती है सप्तम भाव पर इसकी दृष्टि के प्रभाव से पत्नी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा साथ ही स्वभाव में उग्रता भी रहेगी लेकिन आपसी सामंजस्य के द्वारा दाम्पत्य जीवन की मधुरता बनाए रखने में आप समर्थ रहेंगे।

इस प्रकार अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे आपका मांगलिक दोष खत्म हो जाए। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक स्थानों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि या राहु जैसे पापग्रहों की स्थिति होनी चाहिए। ऐसा होने पर आपके सुख सौभाग्य में वृद्धि होगी तथा धनऐश्वर्य से युक्त होकर आप प्रसन्नता पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे तथा एक दूसरे को पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुण्डली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह सूर्यबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

वृश्चिक राशि में रवि हो तो जातक साहसी, लोभी, चिकित्सक, लोकमान्य, क्रोधी उद्योगी, उदररोगी, पुलिस अधिकारी एवं सेना में उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकास्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

कर्क राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सम्पत्तिवान, श्रेष्ठबुद्धि, जलविहारी, सन्ततिवान्, कामी, कृतज्ञ, ज्योतिषी, उन्माद रोगी, स्त्रियों के प्रभाव में आ जाने वाला, चंचलमन, अच्छा स्वभाव वाला, सुन्दर, दयालु, आवेशात्मक एवं विदेश यात्रा की ओर रुचि वाला होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ

सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

बारहवें भाव में मंगल हो तो जातक नेत्ररोगी, स्त्रीनाशक, ऋणी, झगड़ालू, मूर्ख, व्ययशील एवं नीच प्रकृति का पापी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति-दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

वृश्चिक राशि में बुध हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मूर्ख, ऋणी भिक्षुक, अनैतिक चरित्र, रतिक्रिया की अति करने वाला, गुप्तांगों के रोगों से पीड़ित, स्वार्थी एवं अपशब्द बोलने वाला होता है।

गुरु

अष्टमभाव में गुरु हो तो जातक दीर्घायु, नम्रव्यवहार, लेखक, सुखी, शान्त, मधुरभाषी, विवेकी, ग्रन्थकार, कुलदीपक, ज्योतिषप्रेमी, मित्रों द्वारा धननाशक, गुप्तरोगी एवं लोभी होता है।

कर्क राशि में गुरु हो तो जातक सदाचारी, विद्वान्, सत्यवक्ता महायशस्वी, साम्यवादी, सुधारक, योगी, लोकमान्य, सुखी, धनी, नेता, कुशाबुद्धि एवं वफादार होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष, कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

नवम भाव में शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

दशम भाव में राहु हो तो जातक मितव्ययी, वाचाल, सन्ततिक्लेशी चन्द्रमा से युक्त राहु के होने पर राजयोग कारक अनियमित कार्यकर्ता एवं आलसी होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

चतुर्थ भाव में केतु हो तो जातक, कार्यहीन, चंचल, वाचाल एवं निरुत्साही होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- मंगल
(21/08/2024 - 21/08/2031)

मंगल की महादशा 21/08/2024 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 21/08/2031 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में मंगल बारहवें भाव में स्थित है। मंगल की दृष्टि छठे, सातवें तथा तीसरे भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्रदशा चल रही थी। आपकी छोटी यात्राएँ हुई होंगी और आपको बौद्धिक कार्यों में सफलता तथा भाई-बहनों से सुख मिला होगा। इस दशा के दौरान व्यय, यात्रा तथा आध्यात्मिक कार्यों में वृद्धि हो सकती है।

स्वास्थ्य :

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी। किन्तु आपको मामूली चोटों और आँख की समस्याओं के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पैरों तथा टखनों में पीड़ा हो सकती है। कुछ मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य सामान्यतया उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

धन संचय में आपको कुछ समस्या हो सकती है किन्तु, आपकी आय आपके व्यय से कम नहीं होगी और आपके उपर ऋण नहीं होगा। छठे भाव पर मंगल की दृष्टि के फलस्वरूप आपको विपक्षियों-विरोधियों पर विजय मिल सकती है और उनसे लाभ हो सकता है। जीविका के लिये सैन्य सेवा, इन्जीनियरिंग, सर्जरी के कार्य या लोहा-इस्पात से संबद्ध व्यवसाय का चयन कर सकते हैं। लोहा और इस्पात, सर्जरी, अस्पताल प्रशासन या परोपकारी संस्था से संबद्ध व्यवसाय लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों के कार्यों में परिवर्तन और साझेदारों से लाभ हो सकता है और आप करार तथा अनुबन्ध कर सकते हैं। आपका स्थानान्तरण हो सकता है। व्यवसाय-व्यापार से जुड़े लोगों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। सफलता वाधित हो सकती है, व्यापार में उथल-पुथल हो सकती है किन्तु दशा की प्रगति के साथ इसमें सुधार हो सकता है।

वाहन, यात्रा, जमीन-जायदाद :

आपको वाहन सुख मिल सकता है। यात्रा की सम्भावना है और आप व्यापार के सिलसिले में विदेश भी जा सकते हैं। यात्राएं आखिर में लाभदायक सिद्ध होंगी। ऐसा मंगल की अन्तर्दशा में होगा। जमीन-जायदाद के मामलों के लिए यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान सम्पत्ति का लेन-देन हो सकता है।

शिक्षा :

आपको अपनी श्रेणी बरकरार रखने के लिये कठिन परिश्रम करना होगा। किन्तु आप दृढ़संकल्प के साथ अच्छा करेंगे। आपके पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन हो सकता है। यदि आप शोध-परियोजनाओं से सम्बद्ध हैं तो इस दशा में, और खासकर बुध और मंगल की अन्तर्दशा में, अच्छा करेंगे। आपके लिये गणित, तर्कशास्त्र, विधि तथा गूढ़ विषयों का अध्ययन

लाभदायक हो सकता है। आपको विरोधियों व प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिल सकती है। आपकी धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन में रुची होगी।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। बच्चों से अस्थायी रूप से दूर हो सकते हैं। उन्हें अध्ययन कार्यों के सिलसिले में घर छोड़ना पड़ सकता है। आपके जीवन साथी में बाधाओं का सामना करने की पर्याप्त क्षमता होगी। आपके जीवन साथी के साथ सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपकी माता के लिए समय समृद्धिदायक रहेगा, उनकी यात्रा हो सकती है और आपके उनके साथ सम्बन्ध सुन्दर रहेंगे। आपके पिता की अचल सम्पत्ति और जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों के व्यवसाय में उन्नति होगी और बड़ों के लिए समय लाभदायक रहेगा। आपके उनके साथ सम्बन्ध बहुत अच्छे रहेंगे। आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी और इस दशा के दौरान आप उनसे सम्पर्क बनाये रहेंगे।

अन्तर्दशा :

मंगल की दशा में मंगल की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी यात्रा और व्यय हो सकता है। राहु कुछ समस्याएँ उत्पन्न कर सकता है जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लाभ किन्तु स्वास्थ्य कुछ खराब रहेगा। शनि की अन्तर्दशा के फलस्वरूप व्यवसाय में प्रगति होगी जबकि बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपकी शिक्षा उत्तम होगी और निवेश तथा सद्दा सफल रहेगा। केतु के कारण कुछ मानसिक तनाव हो सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन तथा सुख की प्राप्ति होगी। आगे सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान आपको जीवन का आराम तथा माता से लाभ मिलेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको छोटे भाई-बहनों से सुख मिलेगा तथा यात्राएं होंगी।

**अंतर्दशा :- मंगल - राहु
(17/01/2025 - 04/02/2026)**

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 17/01/2025 को प्रारंभ होकर 04/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। अप्रत्याशित घटनाएं आपको सुखियों में रखेंगी। समाजसेवा में मन लगेगा। परिश्रम और दक्षता द्वारा सफलता प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी, सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। माता से लाभ प्राप्त होगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। निवास में परिवर्तन या सुधार संभव है। भूमि से खूब लाभ हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता खूब धन कमाएंगे। उनके जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकते हैं। आपकी माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है; उन्हें उपहार आदि से लाभ होगा, उनके खर्चे बढ़ेंगे, नेत्रों की देखभाल करनी चाहिए।

आपकी संतान शारीरिक कार्य जैसे खेलकूद आदि में उत्तम रहेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो आय में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कठिन परिश्रम करने से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अचल संपत्ति में निवेश करने से भविष्य में लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। घुटनों या पैरों में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए शनिवार के दिन शिवजी की भैरवजी के रूप में पूजा करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - गुरु
(04/02/2026 - 11/01/2027)**

आपकी मंगल की महादशा 21/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/02/2026 को प्रारंभ होकर 11/01/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आप कुछ धन बिना परिश्रम के भी प्राप्त कर सकते हैं। अचानक धन आ सकता है। आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। अध्यात्म या पराविद्या में रुचि हो सकती है। उत्तम भोजन और वस्त्र उपलब्ध रहेंगे, परिवार में वातावरण मधुर रहेगा। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता से लाभ होगा। समाजसेवा में भाग लेंगे। शुभ कार्यों पर धन खर्च होगा।

आपके जीवनसाथी खूब धन प्राप्त करेंगे। आपके पिता धर्म और अध्यात्म में रुचि

लेंगे। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, वे शत्रुओं पर विजयी होंगी। आपके भाई-बहनों के कार्यालय उत्तम होंगे, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कर्ज से मुक्ति मिलेगी, कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी; शिक्षा के लिए उत्तम समय है।

अगर आप सेवारत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, लघु यात्राएं हो सकती हैं। परामर्शदाता और व्यापारी धन कमाएंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा, मगर उदर रोगों से बचाव आवश्यक है। मामूली व्याधियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए ब्रह्माजी की उपासना करें।

अंतर्दशा :- मंगल - शनि (11/01/2027 - 20/02/2028)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2024 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 11/01/2027 को प्रारंभ होकर 20/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में आपको पुत्रों से धन और खुशी की प्राप्ति होगी। आपका मन अध्यात्म और दान-धर्म में लगेगा। ज्योतिष का अध्ययन कर सकते हैं। धन, सम्मान, और सफलता का संकेत है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। आय में वृद्धि होगी। आपकी कार्यक्षमता की तारीफ होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। ठेकेदारी, नौकरी आदि से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी उत्साही रहेंगे। आपके पिता के कार्य पूर्ण होंगे। माता को शत्रुओं पर विजय मिलेगी। भाई-बहनों की साख में वृद्धि होगी, विवाह हो सकता है, यात्रा और अनुबंधों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो प्रोन्नति होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं।

वातजन्य रोग, गठिया आदि से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भैरवजी के रूप में शिवजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- मंगल - बुध (20/02/2028 - 16/02/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 20/02/2028 को प्रारंभ होकर 16/02/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का

कारक है।

इस अवधि में आपके खर्चे बढ़ सकते हैं। एकांत में किये काम लाभप्रद रहेंगे। ध्यान, तंत्र आदि में रुचि हो सकती है। लंबी यात्रा या विदेशयात्रा से लाभ हो सकता है। आयात-निर्यात में सफल हो सकते हैं। शत्रुओं पर विजयी रहेंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति के बहुत से अवसर मिलेंगे। धर्म में रुचि रहेगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। किराये आदि से आमदनी अच्छी हो सकती है; किरायेदार सहयोग करेंगे।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में उन्नति करेंगे; स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता की समृद्धि बढ़ेगी, लंबी यात्राएं होंगी, धर्म में ध्यान लगाएंगी। आपके भाई-बहनों को नौकरी में तरक्की मिलेगी, सम्मान बढ़ेगा, कार्यों में उन्नति होगी।

आपकी संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन आ सकता है; शिक्षा पूर्ण हो सकती है या नये पाठ्यक्रम में प्रवेश ले सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है या नौकरी में परिवर्तन हो सकता है, अचानक लाभ संभव है।

अगर आप सेवारत हैं तो सामूहिक कार्य से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को जनता से लाभ होगा। व्यापारियों के कार्यक्षेत्र में सुविधाएं बढ़ेंगी।

आंख, पैर और स्नायुतंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंतर्दशा :- मंगल - केतु (16/02/2029 - 15/07/2029)

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 16/02/2029 को प्रारंभ होकर 15/07/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। माता से संबंध मधुर रहेंगे, उनसे लाभ हो सकता है। शिक्षा में सफलता मिलेगी। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। कभी-कभी कार्यवश घर से दूर जा सकते हैं। आपके बहुत से मित्र होंगे जो आपकी मदद करेंगे। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। समाज, कार्यक्षेत्र और व्यापार में लाभ होगा; चुनाव में जीत होगी, शत्रुओं पर विजय की संभावना है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता को धन का लाभ और संचय होगा। माता का व्यक्तित्व चमकेगा। भाई-बहनों के लिए धनार्जन का संकेत है, प्रसन्न रहेंगे, शत्रुओं पर विजय होगी, मामापक्ष से लाभ होगा।

आपकी संतान की शिक्षा में बाधाएं आ सकती हैं। उन्हें ऊर्जा के अपव्यय से बचना

चाहिए, बिना लाभ की गतिविधियों से दूर रहें। अगर से कार्यरत हैं तो कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं।

अगर आप कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ हो सकता है, जबकि व्यापारी व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा; छाती में मामूली शिकायत हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- मंगल - शुक्र
(15/07/2029 - 15/09/2030)**

आपके लिए मंगल की महादशा 21/08/2024 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 15/07/2029 को प्रारंभ होकर 15/09/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आपको हर कार्य में सफलता मिलेगी। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। निवेश से लाभ होगा। नये मित्र बनेंगे जो लाभप्रद होंगे। सब सुख-सुविधाएं उपलब्ध होंगी। संतान से संबंध मधुर होंगे। कला में रुचि से खुशी मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। कोई मंत्री या पार्षद आदि बन सकते हैं। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी समृद्ध होंगे। आपके पिता का उत्साह उत्तम होगा। माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, पति से धन का लाभ होगा, अध्यात्म में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहन समृद्ध होंगे; विवाह हो सकता है।

आपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो भागीदार से लाभ होगा, व्यापार में फायदा होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहत सहयोग करेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को लाभ होगा। व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

नेत्र और कानों का ध्यान रखें। अरिष्ट से बचाव के लिए स्त्रियों के कल्याण की संस्थाओं में दान दें।

**अंतर्दशा :- मंगल - सूर्य
(15/09/2030 - 20/01/2031)**

आपकी मंगल की महादशा 21/08/2024 को प्रारंभ हो रही है। मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 15/09/2030 को प्रारंभ होकर 20/01/2031 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपको कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी मगर कुछ उतार-चढ़ाव रहेंगे। स्पर्धी परेशान कर सकते हैं। विदेश की यात्रा या निवास संभव है। खर्चे बढ़ेंगे। आध्यात्मिक उन्नति होगी। सूर्य की छटे भाव पर दृष्टि के कारण धन और उच्चपद प्राप्त हो सकते हैं। कार्यों में सफलता मिलेगी। किरायेदार, मातहत और सहकर्मी सहयोग करेंगे। कार्यालय के वातावरण में सुधार होगा, सरकार से सहायता मिलेगी।

जीवनसाथी को कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। पिता अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। माता सौभाग्यशाली होंगी; घरेलू सुख उत्तम होगा। भाई-बहनों को प्रसिद्धि, प्रोन्नति, कार्यों में सफलता मिलेगी। संतान के जीवन में कुछ परिवर्तन जैसे शिक्षा का समापन आदि हो सकते हैं। अगर वे सेवारत हैं तो स्थानांतरण, निवास में परिवर्तन, अप्रत्याशित लाभ हो सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में परिवर्तन या यात्राएं संभव हैं। व्यापारीगण सफल होंगे, स्पर्धियों को परास्त करेंगे।

सामान्य स्वास्थ्य, नेत्र और पैरों की देखभाल करें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

